अंक-13, दिसम्बर, 2019

ISSN 2394-773X

अधिगम

शैक्षिक शोध
एवं
संदेश पत्रिका

राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., प्रयागराज

Scanned with CamScanner

अधिगम

दिसम्बर– 2019

अंक– 13

प्रस्तुत अंक में

क्र.सं.	शोध पत्र एवं आलेख	पृ0सं0
1	आधिगमिक दौर्बल्य तथा प्राथमिक शिक्षक के कर्त्तव्य डॉ0 आशुतोष दुबे	05–10
2	बापू की नई तालीम को बार–बार दोहराना जरूरी डॉ0 धनंजय चोपड़ा	11–13
3	समय व समाज से सीधा साक्षात्कार करती अखिलेश की कहानियाँ प्रो0 परशुराम पाल	14–17
4	छोटी–बडी संख्या की समझ डॉ0 अश्वनी कुमार गर्ग	18–23
5	अंतरराष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा डॉ0 मनोज राय अमर सिंह	24–31
6	बुद्ध का जीवन दर्शन डॉ0 रेखा मिश्र	32–37
7	सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी तथा भाषा कौशल संवर्द्धन डॉ0 सविता राय	38–44
8	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश का कला परिदृश्य डॉ0 अवधेश मिश्र	45–53
9	वास्तु पुरुष का पौराणिक स्वरूप एवं उसका महत्त्व डॉ0 निहारिका कुमार	54–66
10	भारत में सामाजिक न्याय का अवधारणात्मक विकास कुमार सौरभ	67–73
11	**A Study of Language Development** Anshika Yadav	74–75
12	**Impact of International Migration on the Children's Education: With Special Reference to Migrants' Families In Villages of Eastern Uttar Pradesh** Nisheeth Rai Manoj Kumar Rai	76–82

Scanned with CamScanner

सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी तथा भाषा कौशल संवर्द्धन

डॉ० सविता राय *

भूमिका

शिक्षा समाज निर्माण की प्रक्रिया है। समाज की बदलती आवश्यकताओं के साथ ही निर्माण की इस प्रक्रिया में भी अपेक्षित परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। आज शिक्षा, शिक्षक केन्द्रित न होकर छात्र केन्द्रित है। शिक्षण प्रक्रिया में संरचनावादी दृष्टिकोण (constructive approach) पर बल दिया जा रहा है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा स्वयं सीखने हेतु उचित परिस्थितियों का निर्माण करना शिक्षक का कार्य माना गया है। आज का शिक्षक एक मार्गदर्शक एवं शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों हेतु सुविधा उपलब्ध (Facilitator) कराने वाला माना जा रहा है। शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया में छात्रों के लिए अधिगम परिस्थितियों के निर्माण एवं अधिगम सामग्री की उपलब्धता के साथ ही अधिगम हेतु उन्हें उत्सुक एवं जिज्ञासु बनाने में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में अनुप्रयोग कर अपने इस दायित्व को अधिक प्रभावी ढंग से निभा सकता है।

विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग में शिक्षण को उस कला के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, जिसमें परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार उत्तरोत्तर परिमार्जन अपेक्षित है। विगत् कुछ वर्षों में विज्ञान एवं तकनीकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है एवं शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। शिक्षण एवं प्रशिक्षण सभी क्षेत्रों में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के अनुप्रयोग ने विषयवस्तु के साथ–साथ शिक्षण विधियों को रुचिकर बनाने में सहयोग किया है।वर्तमान में विद्यालयीय शिक्षा, उच्च शिक्षा तथा शोध कार्यों के क्षेत्र को सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी ने व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। प्रस्तुत पत्र में भाषा संबंधी कौशलों के संवर्द्धन हेतु सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के अनुप्रयोग की चर्चा की गई है।

सूचना संप्रेषण तकनीकी की आवश्यकता

शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षण में जितनी ज्यादा इन्द्रियाँ सक्रिय होती हैं अधिगम उतना प्रभावी होता है। इस दृष्टि से सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी में विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षाविदों के साथ ही समाज के अन्य लोगों पर भी प्रभाव डालने की अपार क्षमता है। इसका अनुप्रयोग हमारे देश में शैक्षिक व्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों यथा संसाधनों एवं पहुँच संबंधी समस्याओं में से कुछ को कम करने के नये एवं प्रभावी रास्ते उपलब्ध कराता है। बदलते शैक्षिक परिवेश के साथ शिक्षा की भूमिकाओं एवं शिक्षण प्रक्रिया में भी परिवर्तन हो रहे हैं। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम विद्यालयीय शिक्षा की गुणवत्ता के लिए प्रतिबद्ध होता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों को तैयार करना होता है जो विद्यालय की आवश्यकताओं के अनुरूप हो। बदलते शैक्षिक परिदृश्य की आवश्यकता एवं सूचना तथा संप्रेषण तकनीक की प्रभाविता को ध्यान में रखते हुए (राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अन्तर्गत) सूचना और संप्रेषण तकनीकी योजना 2004 जो कि वर्ष 2010 में पुनः संशोधित की गयी, के अंतर्गत मुख्य चार घटकों को प्रस्तुत किया गया –

1. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक, सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के साथ भागीदारी।
2. प्रौद्योगिकी समर्थित स्मार्ट विद्यालयों की स्थापना।
3. शिक्षक संबंधित हस्तक्षेप यथा–विशिष्ट शिक्षकों की नियुक्ति, आईसीटी में सभी शिक्षकों की क्षमता को बढ़ाना और राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार हेतु योजना।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली

Scanned with CamScanner

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबरमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

प्रकाशक:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बी-4, कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नवदेहली-110016

शोधप्रभा-प्रकाशनपरामर्शदात्रीसमिति:

प्रो. प्रेमकुमारशर्मा, वेदवेदाङ्गपीठप्रमुख:

प्रो. हरेराम त्रिपाठी, दर्शनपीठप्रमुख:

प्रो. जयकुमार: एन. उपाध्ये, साहित्यसंस्कृतिपीठप्रमुख:

प्रो. के. भारतभूषण:, शिक्षापीठप्रमुख:

प्रो. केदारप्रसादपरोहा, आधुनिकविद्यापीठप्रमुख:

निर्णायकमण्डलसदस्या:

प्रो. बदरीनारायणपञ्चोली, सेवानिवृत्त:, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय: नवदेहली

प्रो. अमिता शर्मा, सेवानिवृत्ता, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:, नवदेहली

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री, कुलपति:, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय:, नवदेहली

प्रो. श्रीकिशोरमिश्र:, प्रोफेसर-संस्कृतविभाग:, काशीहिन्दूविश्वविद्यालय:, वाराणसी

प्रो. रामपूजनपाण्डेय:, दर्शनसंकायप्रमुख: सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय:, वाराणसी

प्रो. रमाकान्तपाण्डेय:, साहित्यविभागाध्यक्ष:, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य, जयपुरपरिसर:

प्रो. संतोषकुमारशुक्ल:, आचार्य:, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्रम्, जवाहरलालनेहरूविश्वविद्यालय:

प्रो. ओमनाथबिमली, प्रोफेसर-संस्कृतविभाग:, दिल्लीविश्वविद्यालय:, देहली

प्रो. भारतभूषणत्रिपाठी, व्याकरणविभागाध्यक्ष:, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय:, लखनऊपरिसर:

ISSN :- 0974 - 8946

45 वर्षे चतुर्थोऽङ्क: (अक्टूबरमासाङ्क:) 2020 ई.

© श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बेवसाइटसङ्केत: - www.slbsrsv.ac.in

ई-मेलसङ्केत: - shodhaprabhalbs@gmail.com

दूरभाषसङ्केत: - 011-46060609, 46060502

सूचना:- शोधपत्रलेखकै: स्वशोधपत्रे दूरभाषाङ्का: अवश्यं लेखनीया:

मुद्रक: - गणेशप्रिंटिंगप्रेस:, कटवारियासराय: नवदेहली-16

प्रधानसम्पादकः

प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सम्पादकमण्डलम्

प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा

प्रो. हरेरामत्रिपाठी

प्रो. भागीरथिनन्दः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोधसहायकः

मुद्रणसहायकः

डॉ. जीवनकुमारभट्टराई

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	भारतीयसंस्कृतेः सातत्यपूर्णपरम्परायाः संवाहकं पुराणसाहित्यम्	**प्रो. रमेशभारद्वाजः**	1–9
2.	निपातार्थसमीक्षणम्	**डॉ. अशोककुमारमिश्रः**	10–14
3.	दर्शनान्तरीयदिशा व्याकरणे शक्तिस्फोटयोर्विमर्शः	**डॉ. महेशकुमारद्विवेदी**	15–20
4.	समासान्तविषये प्राच्यनव्ययोः मतभेदविचारः	**डॉ. अरविन्दमहापात्रः**	21–26
5.	अधिकरणस्वरूपविमर्शः	**श्रीपीताम्बरनिराला**	27–33
6.	व्याकरणशास्त्रस्य इहामुष्मिकोभयफलप्रसाधकत्वम्	**डॉ. मनोजकुमारद्विवेदी**	34–38
7.	जैमिनीयं प्रजातन्त्रविधानम्	**डॉ. सङ्कल्पमिश्रः**	39–50
8.	न्याय-वैशेषिकजगति दार्शनिकः गोवर्धनमिश्रः	**खुशबू शुक्ला**	51–57

9.	मल्लिनाथेन जीवातौ निर्दिष्टानां तिङन्तविवेचनस्थलानां महत्त्वतारतम्यात् स्वरूपवैविध्यम्	**रजनी**	58-65
10.	बुद्धेः प्राचीनार्वाचीनावधारणायाः विमर्शः	**डॉ. सवितारायं**	66-74

हिन्दी विभाग

11.	भारतीय-ज्ञान-परम्परा में "स्त्री-शक्ति"	**डॉ. अनिता स्वामी**	75-89
12.	मेघदूत का वैज्ञानिक पक्ष	**डॉ. राम विनय सिंह**	90-95
13.	शांकरवेदान्त में क्रिया का दार्शनिक स्वरूप	**डॉ. कपिल गौतम**	96-110
14.	चतुर्व्यूहात्मक योगशास्त्र का विवेचन	**डॉ. सुनीता सैनी**	11-116
15.	न्यायमंजरी में बौद्ध सम्मत सविकल्पक प्रत्यक्ष का विचार	**डॉ. अनीता राजपाल**	117-123
16.	संस्कृत-पालि भाषाओं में नामधातुओं का स्वरूप	**श्री सुनील जोशी**	124-137
17.	पाणिनीय परम्परा के आलोक में 'हलादिः शेषः'	**डॉ. रवि प्रभात**	138-143

English Section

18.	The Theory of Ideal Governance in Kautilya's Arthaśāstra	**Prof. Sachidananda Mahapatra**	144-152

UGC- CARE Listed
अक्टूबर-दिसम्बर, 2020

शोधप्रभा
वर्ष : 45, चतुर्थोऽङ्कः

बुद्धेः प्राचीनार्वाचीनावधारणायाः विमर्शः

डॉ. सविताराय*

निश्चयान्तःकरणवृत्तिः बुद्धिः इति वेदान्तसिद्धान्तानुगुणं बुद्धेः स्वरूपं विवेचितं भारतीयवाङ्मये। पाश्चात्यचिन्तकैः मनोवैज्ञानिकैः विवेचितबुद्धिस्वरूपं 'व्यक्तेः सामञ्जस्ययोग्यता' एव। यथा विविधेषु बिन्दुषु भारतीयपाश्चात्यचिन्तकाः चिन्तयन्ति तथैव बुद्धेरन्वेषणमपि तैः चिन्तितम्। पाश्चात्यमनोवैज्ञानिकैः कृतस्य बुद्धेः विवेचनस्य भारतीयचिन्तकैः कृतस्य बुद्धेः विवेचनस्य च साम्यवैषम्यविवेचनम् एव पत्रेऽस्मिन् वर्णितम् अस्ति।

आधुनिकपाश्चात्यमनोविज्ञाने बुद्धेरवधारणा

पाश्चात्यमनोवैज्ञानिकैः बुद्धिस्वरूपसम्बन्धे अनेकानि मतानि प्रदत्तानि, अनेकसिद्धान्तानां प्रतिपादनमपि तैः कृतम्। केचन मनोवैज्ञानिकाः बुद्धिं ज्ञानस्य योग्यतात्वेन, केचन अनुभवस्य योग्यतात्वेन, केचन अमूर्त्तचिन्तनस्य योग्यतात्वेन च स्वीकुर्वन्ति। अत एव स्पष्टमस्ति यत् बुद्धेः सम्प्रत्ययस्य सन्दर्भे अत्यधिका अस्पष्टता, अनिश्चितता च विद्यमाना वर्तते।

बुद्धिः न केवलं ज्ञानस्य क्षमतात्वेन, अनुभूत्या लाभप्राप्तेः योग्यतात्वेन, अमूर्त्तचिन्तनस्य योग्यतारूपेण च परिभाषयितुं शक्यते अपितु बुद्धिः एतेषां सर्वेषां विषयाणां समुच्चयो वर्तते येन माध्यमेन व्यक्तिः सम्यक् रूपेण चिन्तनं कुर्वन् पूर्वानुभवैः लाभमवाप्य उद्देश्यपूर्णरूपेण कार्यं करोति। राबिन्सन्-महोदयानुसारेण बुद्धेः तात्पर्यं संज्ञानात्मकव्यवहाराणां सम्पूर्णसमूहेन सह अस्ति, यः मानवेषु विवेकेन सह समस्यासमाधाने, परिस्थितीनामनुकूलने, अमूर्त्तचिन्तने, स्वानुभूत्या लाभप्राप्तौ च क्षमतां प्रदर्शयति।

प्राचीनभारतीयदर्शनेषु बुद्धेरवधारणा

भारतीयसंदर्भे बुद्धितत्त्वस्य अवगमनाय सर्वप्रथमम् अन्तःकरणतत्त्वस्य ज्ञानमावश्यकत्वेन अपेक्षितं भवति। अन्तःकरणतत्त्वस्य अवगमे सति बुद्धितत्त्वस्य

---

*सहायकाचार्या, शिक्षाशास्त्रविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली।

OUR PUBLICATIONS

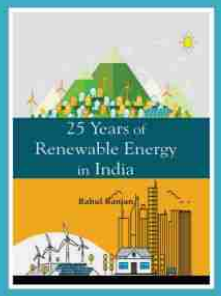

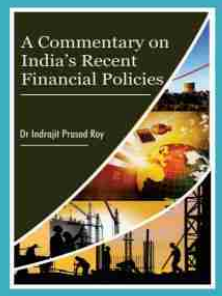

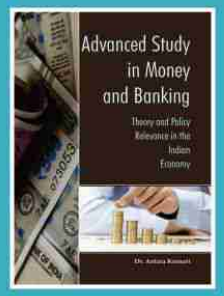

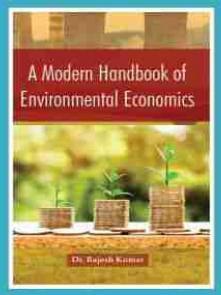

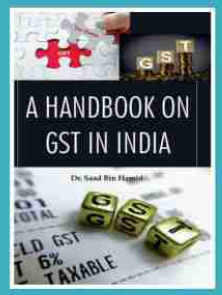

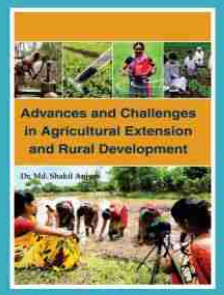

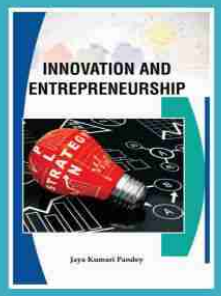

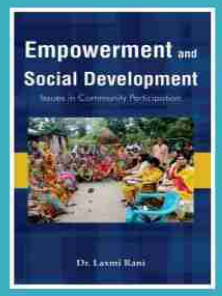

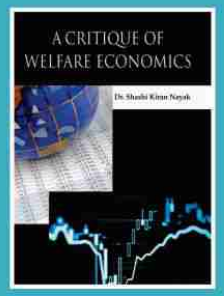

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी–फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

"वैदिक मनोविज्ञान"–अनामिका वर्मा 2010
गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकेर जिला के विषेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी 2013
देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता–डॉ० राम पाण्डेय 2019
गदल का प्रासंगिक-विमर्श–डॉ० रमेशकुमार टण्डन 2022
भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ0 भीमराव राम जी अम्बेडकर का अवदान–डॉ० विजय कुमार 2025
दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं–कार्तिक राय 2029
कविता के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ० शबाना हबीब 2032
उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता–डॉ० प्रमिला यादव 2038
दलित-विमर्श और रामचरितमानस–प्रो० प्रदीप श्रीधर 2042
लैंगिक (जेण्डर) परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण–जयंती; डॉ. ज्योति कुमारी 2047
आयु वर्ग एवं लैंगिक भेद का इन्सेफ्लाइटिस से सम्बन्ध : उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में–अमरनाथ जायसवाल; डॉ० साधना श्रीवास्तव 2058
भारतीय विदेश नीति में बदलाव व उभरती चुनौतियाँ–चेतन बहोत 2062
विश्व में बढ़ता प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान–डॉ० सुमन फुलारा 2066
अवध की प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप (19वीं शताब्दी)–गणेश कुमार 2068
विभाजन के केंद्र में गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान–निधि वर्मा 2071
पंजाब में विधायी नेतृत्व के राजनीतिक लक्ष्य (1997-2017)–डॉ० सुनीता रानी 2074
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा–रक्षा सिंह; प्रो० अमिता सिंह 2079
मनरेगा: गाँवों में रोजगार सृजन का सुलभ साधन–राकेश कुमार वर्मा; डॉ० राम सेवक सिंह यादव 2084
संस्कृति, परंपरा और लोक: समकालीन अर्थगत विश्लेषण–प्रवीण कुमार जोशी 2088
हरियाणा की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व शैक्षणिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन –सुरेन्द्र; डॉ० तिलक राज आहुजा 2091
प्रशासन, शहरीकरण और प्रदूषण–रामावतार आर्य 2098
पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की आर्थिक संरचना–डॉ० संजीव कुमार सिंह; सीमा सिंह; डॉ० अभिषेक सिंह 2100
इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का कथात्मक वैविध्य–दीप्ति यादव 2107
बिहार में महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अनिल झा 2111
शिक्षकों में हास्यवृत्ति और उनकी शिक्षण प्रभावकता–प्रो. वन्दना गोस्वामी; रेखा बागङा 2115
दीनदयाल उपाध्याय और मीडिया माध्यम–राज कुमार भारद्वाज 2117
जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षकों, छात्रों तथा समाज के प्रति विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 2121
भारतीय नारी मुक्ति के संदर्भ में महात्मा गाँधी का योगदान–सुनिता कुमारी 2126
'मोरचे' का समीक्षात्मक अध्ययन (सुषम बेदी के विशेष संदर्भ में)–संगीता यादव 2129
शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–रफत फातिमा; डॉ० नलिनी मिश्रा 2132
यशपाल का स्त्री चिंतन–डॉ० अभिषेक मिश्र 2136
समाज के सजग साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम–श्रीमती पंकज यादव 2140
शिवपुराण में अरण्यवासी एक विवेचना–डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 2142
छतीसगढ के कुष्ठ आश्रम और इसकी पुनर्वास योजना का ऐतिहासिक विश्लेषण (धमतरी जिले की शांतिपुर कुष्ठ आश्रम के विशेष संदर्भ में)–रणजीत कुमार; डॉ० बन्सो नुरूटी 2145
छत्तीसगढ़ में बैंको द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में वितरित ऋणों का विश्लेषण ''कृषि ऋणों'' के विशेष संदर्भ में–श्रीमती भूमिका शर्मा; डॉ० अर्चना सेठी 2150
करोना काल में बालकों के सामाजिक व शैक्षणिक कौशल विकास में ऑनलाइन कक्षाओं के दुष्प्रभावों का मनोसामाजिक अध्ययन (रीवा जिले के शहरी बालक-बालिकाओं के संदर्भ में)–डॉ० सुनीत कुमार तिवारी; श्रीमती निर्मला तिवारी 2155
कुँवर नारायण की कविताओं में जीवन-बोध–कुमार सौरभ 2161

शिक्षण के विकास मे तकनीकी और संचार का योगदान–डॉ० दिनेश कुमार 2460
सिद्धियों की वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० मनोज कुमार टाक 2463
संत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संत रैदास–राजेश कुमार यादव 2466
गांधी के राजनैतिक विचार–माया यादव; डॉ० संध्या जायसवाल 2470
मानवीय उत्कर्ष निमित्त योगासन शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा (हठयोग परम्परा के विशेष सन्दर्भ में)–जयदेव 2474
स्मार्टफोन के उपयोग का किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव–तुलसी राम; डॉ. चंद्रकांत शर्मा 2477
सोशल मीडिया की तर्कसंगिकता का एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन–डॉ० सेवा सिंह बाजवा 2482
मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति–अमित कुमार गुप्ता; प्रो० कनुभाई निनामा 2486
भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति–डॉ० सुषमा कुमारी 2489
औपनिवेशिक बिहार में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा–रश्मि कुमारी 2491
समासे पूर्वनिपाततत्त्वम्–डॉ० अनुप कुमार रानो 2496
बाबासाहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं मानवाधिकार–कन्हैया प्रसाद 2501
कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में सामर्थ्यवान नारी–प्रोफेसर (डॉ०) राजिन्द्र पाल सिंह जोश; अनुराधा कुमारी (पीएच० डी०) 2504
बाल साहित्य में कहानी -उपन्यास का योगदान–डॉ० सुषमा कुमारी 2507
समाधि सिद्धि निमित्त प्राणायाम की उपादेयता - एक समीक्षा–मोहित आर्य 2510
हिंदी साहित्य में छायावाद काव्य: प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र–अरविन्द कुमार दीक्षित 2513
भारतीय दर्शन में योग का महत्त्व–संजय कुमार 2517
उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–अमिता शुक्ला; डॉ० ममता पंत 2520
अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व–डॉ० नवल किशोर बैठा 2524
डिजिटल मार्केटिंग: व्यापार और मार्केटिंग का बदलता स्वरुप–डॉ० साद बिन हामीद; डॉ० तनवीर अहसन निज़ामी 2527
दर्शनभेदा:–प्रो० प्रसून दत्त सिंह 2529
पण्डिताक्षमारावमहोदयाया: कथामुक्तावल्या: समाजिकविश्लेषणम्–श्री. विश्वजित् वर्मन 2531
मलयालम के लोक गीत और केरल की संस्कृति–डॉ० सीमा चन्द्रन 2535
दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल–डॉ. सविता राय 2538
वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा की प्रासङ्गिकता–डॉ० श्याम कुमार झा 2544
स्थानीय दलों में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व–अभिषेक कुमार 2548
श्री नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में चेतना–श्रीमती सुमित्रा यादव 2551
ग्वालियर घराने के प्रमुख स्तम्भ: पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी का व्यक्तित्व व कृतित्व–चाँदनी; डॉ० लोकेश शर्मा 2556
'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में सामाजिक चित्रण–किरण देवी 2561
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मानवाधिकार एवं उनकी स्थिति–पूनम यादव; प्रो० रणबीर सिंह गुलिया 2565
हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट की गुरु शिष्य परंपरा–रेखा; डॉ० मुकेश कुमार 2568
प्रो० अभय मोर्य कृत 'त्रासदी' उपन्यास में चित्रित समाज–रीतू; डॉ० सुमन राठी 2572
हरियाणा की सांग कला में श्री खीमचन्द स्वामी का अवदान–योगेश कुमार 2575

दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल

डॉ. सविता राय

शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय, संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो समाज की आवश्यकताओं के साथ परिवर्तित होती रहती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र छात्र है जिसमें शिक्षण-अधिगम हेतु संरचनावादी उपागम को उपयोगी माना जा रहा है और इस उपागम के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा स्वयं करके सीखने पर बल दिया जा रहा है। विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने की इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका एक ऐसे मार्गदर्शक की होती है जो सीखने हेतु उचित परिस्थितियों का निर्माण करता है। विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग शिक्षण को एक ऐसी कला के रूप में स्वीकार किया जा रहा है जिसमें शिक्षक को निष्णात होने के लिये इसमें नवाचार को प्रयोग करने की आवश्यकता है। शिक्षण की प्रक्रिया को सफल बनाने तथा अधिकाधिक अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक शिक्षण के समय ऐसी विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का प्रयोग करता है जिनसे विषय सामग्री को सरल एवं रूचिकर बनाकर प्रस्तुत किया जा सके, इन सामग्रियों को सहायक सामग्री कहते हैं। शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली ये सहायक सामग्रियां दृश्य, श्रव्य अथवा दृश्य-श्रव्य तीनों ही रूपों में हो सकती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में दृश्य, श्रव्य अथवा दृश्य-श्रव्य तीनों ही के संबंध में कई नवाचार हुए है। दृश्य-श्रव्य सामग्री तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इससे संबंधित सामग्री एवं शिक्षण विधि यों के प्रयोग हेतु आवश्यक कौशल के संदर्भ में प्रस्तुत लेख में चर्चा की गई है।

दृश्य-श्रव्य सामग्री

विज्ञान एवं तकनीकी के विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में नित नवीन प्रयोग करने हेतु अनेक मार्ग प्रशस्त कर दिये हैं। आज सीखना केवल श्यामपट्ट, चित्र, चार्ट अथवा पुस्तक द्वारा ही संभव नही है अपितु मल्टी मीडिया तथा सूचना संप्रेषण के अत्याधुनिक साधनों की उपलब्धता ने सीखने के अनेक उपागम प्रदान किये हैं। किसी विषय-वस्तु, सिद्धांत, तथ्य या पदार्थ से संबंधित ज्ञान अर्थात उसके गुणों, उपयोगिता एवं कार्य-कुशलता आदि को स्पष्ट करने के लिए शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले उन सभी साधनों को दृश्य-श्रव्य सामग्री कहते हैं जिन्हें आंखों से देखा जा सके तथा श्रवणेन्द्रिय के द्वारा सुना जा सके।

एडगर ब्रूस वैसल के अनुसार- श्रव्य-दृश्य साधन अनुभव प्रदान करते हैं। उनके प्रयोग से वस्तुओं तथा शब्दों का संबंध सरलता से जुड़ जाता है। बालकों (विद्यार्थियों)के समय की बचत होती है, जहाँ बालकों(विद्यार्थियों) का मनोरंजन होता है वहाँ बालकों (विद्यार्थियों) की कल्पना शक्ति तथा निरीक्षण शक्ति का भी विकास होता है।

डैण्ड के अनुसार - सीखने की प्रक्रिया में सहायक देखने तथा सुनने के साधन जैसे- चार्ट, चित्र, माडल, मानचित्र, चलचित्र, रेडियो, टेलीविजन इत्यादि को दृश्य-श्रव्य साधन अथवा सामग्री कहते हैं।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विचारों, भावों, तथ्यों, आंकड़ों और सूचनाओं के स्वरूप और उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने हेतु प्रयुक्त उपकरणों के आधार पर दृश्य-श्रव्य साधनों को यांत्रिक व अयांत्रिक दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। यांत्रिक उपकरणों अथवा सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग के आधार पर दृश्य-श्रव्य साधनों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री। दृश्य सामग्री के अन्तर्गत स्लाइड्स, प्रोजेक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर, ट्रांसपेरेन्सी, कंप्यूटर तथा मूक चलचित्र इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है। ऑडियो सीडी, रेडियो, टेलीफोन तथा भाषा प्रयोगशाला को श्रव्य सामग्री के अन्तर्गत और टेलीविजन, कंप्यूटर सहायक सामग्री, मल्टीमीडिया, डिजिटल बोर्ड, एल.सी.डी. प्रोजेक्टर तथा ध्वनियुक्त चलचित्र को दृश्य-श्रव्य सामग्री। सम्मिलित किया जा सकता है। सामान्य रूप से समग्र दृश्य-श्रव्य साधनों भी तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

दृश्य सामग्री

वह शिक्षण सहायक सामग्री जिसे केवल देखा जा सकता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक विषयवस्तु के अन्तर्गत तथ्यों, वस्तुओं अथवा संदर्भों को स्पष्ट करने के लिये ऐसी सामग्रियों अथवा उपकरणों की सहायता लेता है जिन्हें देखकर विषय वस्तु को समझा जा सकता है जैसे श्यामपट्ट, मानचित्र, रेखाचित्र, ग्लोब, चार्ट इत्यादि। इन सामग्रियों को दृश्य सामग्री कहते हैं।

International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 20-02-2022, Accepted: 06-03-2022, Published: 22-03-2022
Volume 7, Issue 1, 2022, Page No. 38-43

क्षमता आधारित शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी (आई.सी.टी.) का समाकलन

डा. सविता राय
शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय, संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
21वीं शताब्दी का युग तकनीकी ज्ञान, तकनीकी सक्षम मस्तिष्क और अवास्तविक बुद्धि का युग है। ज्ञान का विस्फोट, संचार क्रांति, प्रौद्योगिकी उन्नति, जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान की खोजों के अनुप्रयोग तथा विज्ञान के प्रति जनमानस की बढ़ती आकांक्षाएं इस युग को एक अलग पहचान दी है। तकनीकी पर निर्भर जीवन में सफलता के मार्ग पर छात्र के कदमों को सशक्तता के अग्रसारित करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थों में उपयुक्त मानसिकता का विकास करने का प्रयास किया जाये। विकास के इस प्रयास में पहला कदम ऐसे शिक्षकों को तैयार करना है जो स्वयं तकनीकी उपकरणों का ज्ञान रखते हों तथा उपयुक्त तकनीकी उपागमों का शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अनुप्रयोग कर सकें। अतः शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण दोनों ही स्तरों पर शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक प्रशिक्षक हों अथवा सेवारत शिक्षक हों अथवा सेवापूर्व शिक्षक हों उन्हें भी अद्यतन और व्यावहारिक रहना होगा और जीवन पर्यन्त सीखने को महत्व देना होगा। शिक्षक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शैक्षिक परिस्थितयों में सुधार व समस्याओं का समाधान आवश्यक है। सूचना संप्रेषण तकनीकी ने जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है और शिक्षण–अधिगम सहित सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन कियें हैं। प्रस्तुत पत्र में शिक्षक के तकनीकी ज्ञान को उसकी आवश्यक क्षमता के रूप में प्रस्तुत कर शिक्षक शिक्षा में आई.सी.टी के समाकलन के महत्त्व को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः क्षमता आधारित शिक्षक शिक्षा, क्षमता संवर्द्धन, तकनीकी, आईसीटी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रस्तावना
किसी भी देश की उन्नति वहां प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी उत्तम व्यवस्था पर निर्भर करती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल पद्धति पर आधारित शिक्षा थी। वैदिक युग से वर्तमान युग तक शिक्षा के विकास की यात्रा को देखें तो भारत में शिक्षा विभिन्न चरणों गुजरी है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा को जनमानस की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के महनीय प्रयास किये गये। वैश्विक महामारी के वर्तमान कोरोना काल में भी शिक्षार्थियों तक शिक्षा की निर्बाध पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कक्षा–कक्ष परिस्थितियों को भी परिवर्तित कर दिया गया है। वर्तमान में ऑनलाइन मंच का प्रयोग करके शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। भारत सरकार एवम् सभी राज्यों की सरकारों ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। छात्रों को विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से ई कंटेंट उपलब्ध कराए जा रहे हैं। विभिन्न संस्थाओं यथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् एवं अन्य क्षेत्रीय बोर्ड के द्वारा शैक्षिक ऐप्स तैयार किये गये हैं और उनकी वेबसाइट पर शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों की ही सहायता के लिए पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन सामग्री मुफ्त में उपलब्ध है। परन्तु भारत जैसे युवा देश जिसमें छात्रों की संख्या अधिक तथा आधारभूत सुविधाओं और प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव होने के कारण स्थिति चिंताजनक हैं ।

क्षमता आधारित शिक्षण की आवश्यकता
तकनीकी विकास ने समाज में दो प्रकार से विकास किया है– पहला, मानवीय क्षमताओं में वृद्धि करते हुए बड़े स्तर पर समाज में लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने में मदद करके। दूसरा, आर्थिक प्रगति के कारण मानव विकास के साधन के रूप में तकनीकी नवाचार का लाभ देकर और उत्पादकता में वृद्धि करके। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी प्रभाव से बदलती परिस्थितियां भावी शिक्षकों में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी दक्षता को बढ़ाने की मांग करती है साथ ही सेवारत एवं सेवापूर्व शिक्षकों को भी बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने पर बल देती है। अतः बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शैक्षिक परिस्थितयों में सुधार व समस्याओं का समाधान आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएं विद्यमान हैं और इन समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या क्षमतायुक्त अथवा दक्ष शिक्षकों को तैयार करना है जो शिक्षण कला में निपुण, कार्यकुशल, विषय के ज्ञाता और नवाचारों को जानने–समझने तथा अनुप्रयोग करने में कुशल हों। शिक्षण संबंधी क्षमता के साथ ही शिक्षक में प्रशासन और प्रबंधन संबंधी क्षमता, विद्यालय तथा समाज में सांमजस्य संबंधी क्षमता, पाठ्यक्रम विश्लेषण व निर्माण संबंधी क्षमता तथा भावात्मक व व्यक्तित्व आधारित क्षमताएं यथा अभिप्रेरणा व मूल्य इत्यादि का होना भी आवश्यक है। शिक्षकों की कक्षा–कक्ष निपुणता तथा प्रबंधन क्षमता को संवर्द्धित करने के लिए ही क्षमता आधारित शिक्षक शिक्षा (Competency Based Teacher Education-CBTE) का प्रावधान किया गया। क्षमता आधारित शिक्षक शिक्षा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता को संवर्द्धित करने में सहायक है। छात्रों तथा शिक्षकों को वांछित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है। शिक्षक के व्यक्तित्व को परिमार्जित करने में सहायक है। छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहायक है। शिक्षण हेतु उपयुक्त विधियों और संसाधनों का चयन करने में शिक्षक की सहायता करता है।

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. शोधकर्मणि नैतिकताप्रसङ्गः 1-7
-श्रीतरुणचौधुरी

2. शैवदर्शने श्रुतेः प्रामाण्यविषये अभिनवगुप्तमतम् 8-15
-श्री-अरूपमसान्यालः

3. शाङ्करमते पञ्चीकरणं लययोगविमर्शश्च 16-30
-मानसी

हिन्दी विभाग

4. नाट्य-सन्धि-सन्ध्यङ्गनिरूपण (भाग-2) 31-54
-डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

5. राजा असमाति सम्बन्धी ऋग्वेदीय आख्यान का तात्त्विकस्वरूप 55-61
-डॉ लक्ष्मी मिश्रा

6. वैदिक साहित्य में कृषि विज्ञान के साधन 62-70
-डॉ. राजमंगल यादव

7. जेंडर : संकल्पनाएँ और समाज 71-82
-डॉ. सविता राय

8. औपनिषदिक प्रणव ध्वनि का शारीरिक एवं मानसिक रोगों के शमन हेतु योगदान 83-90
-डॉ. सपना यादव

English Section

9. **Therapeutic Context in the Basic Texts of Hatha Yoga-A Review Study** 91-104
-Dr. Chintaharan Betal

✦✦✦

जेंडर : संकल्पनाएँ और समाज

डॉ. सविता राय*

परिवार, समुदाय, समाज व राष्ट्र के विकास में स्त्री एवं पुरुष की समान भूमिका होती है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि सृष्टि के संचालन में ही इन दोनों का ही योगदान आवश्यक है। अत: किसी की श्रेष्ठता या हीनता का प्रश्न ही नहीं उठता। हम अपने समाज में देखते हैं कि प्राय: अधिकांश क्षेत्रों में पुरुषों का अधिपत्य है। इसका कारण कुछ भी हो परन्तु इस अधिपत्य का प्रतिफल ही पुरुष प्रधान समाज है। **समाज में स्त्री एवं पुरुषों के कार्यों व दायित्वों का बंटवारा है** जो शायद उनकी शारीरिक बनावट के स्थान पर उनकी ताकत व अधिपत्य को ध्यान में रखकर किया गया है। यह बंटवारा ही जेंडर शब्द की उत्पत्ति को स्पष्ट करता है क्योंकि इसका संबंध समाज द्वारा निर्मित इन दायित्वों से है जिन्हें नियम भी कहा जा सकता है। इन नियमों के द्वारा ही सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में असमानताओं को तार्किक व समाज के लिये उचित सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है।

जेंडर की अवधारणा

दुनिया की पहली नारीवादी चिंतक और विचारक मानी जाने वाली सिमोन द बोवुआर ने अपनी पुस्तक 'दी सेकेण्ड सेक्स' (1949) में स्त्रियों की समस्याओं को पहली बार इतिहास, विज्ञान और दर्शन से समायोजित कर आर्थिक व सामाजिक संदर्भों में उसकी व्याख्या की। सिमोन द बोवुआर ने अपनी पुस्तक सेकेण्ड सेक्स में लिखा है **स्त्री पैदा नहीं होती बना दी जाती है।** उनका यह भी कहना है कि **लिंग (सेक्स) और जेंडर को अलग अलग रूपों में समझना चाहिए** और स्त्री के साथ भेदभाव जेंडर के कारण होता है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि जेंडर और लिंग को अलग कैसे समझा जाए? जेंडर एक पाश्चात्य शब्द है, जिसका समानार्थक शब्द भारतीय शब्दकोष में नहीं मिलता। अत: लिंग एवं जेंडर के अर्थ के संदर्भ में स्थिति बहुत भ्रामक है। जेंडर समाज द्वारा बनायी गयी ऐसी परिधि है, जिसका व्यक्ति के जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। समाज ने व्यक्तियों के व्यवहार, उत्तरदायित्व,

---

* सहायिकाचार्या, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Peer Reviewed ISSN Approved | Impact Factor: 8.57

TIJER INTERNATIONAL JOURNAL

International Peer Reviewed & Refereed Journal, Open Access Journal
ISSN 2349-9249 | Impact factor: 8.57 | ESTD Year: 2014

ISSN: 2349-9249

International Peer Reviewed
Refereed Journals,
Open Access Journal

TIJER

Scholarly open access journal, Peer-reviewed, and Refereed Journal, Impact factor 8.57 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI)

Website: www.tijer.org
E-mail: editor@tijer.org

Publisher and Managed by: IJ Publication

Peer Reviewed ISSN Approved | Impact Factor: 8.57

TIJER INTERNATIONAL JOURNAL

International Peer Reviewed & Refereed Journal, Open Access Journal
ISSN 2349-9249 | Impact factor: 8.57 | ESTD Year: 2014

ISSN: 2349-9249

International Peer Reviewed
Refereed Journals,
Open Access Journal

TIJER

Scholarly open access journal, Peer-reviewed, and Refereed Journal, Impact factor 8.57 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI)

Website: www.tijer.org
E-mail: editor@tijer.org

Publisher and Managed by: IJ Publication

आध्यात्मिका बुद्धेः विमर्शः

डॉ. सविता राय[1]
एस्सिटेंट प्रोफेसर, शिक्षापीठ,
श्रीलाल बहादुर शास्त्री-
राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली।

सारांश

पूर्वस्यां शताब्यां बुद्धेः सम्प्रत्ययेषु विशालं परिवर्त्तनम् अभवत्। एतेन परिवर्त्तनेन बुद्धिलब्धेः सम्प्रत्ययेषु अपि परिवर्त्तनं जातम्। वर्तमानसमये मनोवैज्ञानिकैः बुद्धिलब्धेः सहैव भावात्मिकलब्धेः आध्यात्मिकलब्धेश्च परिचयं कर्तुम्, तयोः समन्वितव्याख्यां कर्तुं च प्रयासाः क्रियमाणाः सन्ति। विशतिशताब्या अन्ते आधुनिकपाश्चात्यमनोवैज्ञानिकैः विचारस्य अस्य स्वीकृतिः प्राप्ता, यत् मानवीय बुद्धेः सम्प्रत्ययः तावद् पूर्णतां न भविष्यति यावद् अस्मिन् आध्यात्किबुद्धेः सम्प्रत्ययस्य समावेशो न जातः। पत्रे अस्मिन् व्यक्तित्वस्य सर्वाङ्गीणविकासे आध्यात्किबुद्धेः वर्णितम् अस्ति।

मुख्यशब्दाः- भावात्मकबुद्धिः, आध्यात्मिकबुद्धिः, शैक्षिकबुद्धिः, संज्ञानात्मकक्षमता, आत्माभिज्ञता।

वर्तमाने भावात्मकबुद्धिः समधुरसमयोजनस्य कृते प्रभावी अनुकूलनक्षमता अस्ति चेत् आध्यात्मिकबुद्धिः समस्यायाः अर्थस्य मूल्यस्य तथा अन्तिममौलिकविचारेण सहैव परिचयार्थं तत्समाधानहेतवे च अवगम्यते। शैक्षिक-भावात्मक-आध्यात्मिकबुद्धयः मानवबुद्धेः कठिनसमस्याः प्रस्तुवन्ति। बौद्धिक-शैक्षिकबुद्धी व्यक्तेः संज्ञानात्मकक्षमतां मापनं क्रियेते। परन्तु दैनिकजीवने व्यक्तिः यासां समस्यानां परिस्थितीनां प्रत्यक्षं करोति, तासां भावात्मकपरिस्थितीनां कृते इयं बुद्धिः योग्यता वा व्यक्तिं न्यूनसज्जतां सम्पादयति। अतः यदि व्यक्तेः सम्पूर्णव्यक्तित्वस्य विकासस्य वार्ता भवति चेत् तदा केवलं शैक्षिकयोग्यतायाः बौद्धिकयौग्यतायाः (IQ) ज्ञानं पर्याप्तं नास्ति अपितु आसां त्रयाणां शैक्षिकभावात्मकाध्यात्मिकबुद्धीनां परिज्ञानम् उपयुक्तं भवेत्। अधोवर्णिततालिकायां शैक्षिकभावात्मकाध्यात्मिकबुद्धेः संबध्दितानां विविधपक्षाणां विश्लेषणं लिखितं वर्त्तते।

सारिणी (i) – बुद्धेः विविधस्वरूपम्

शैक्षिकबुद्धिः (IQ)	**भावात्मकबुद्धिः** (EQ)	**आध्यात्मिकबुद्धिः** (SQ)
• तार्किकदृष्टिकोणम् • शांन्तिप्रिय/न्यायपालनम् • प्रायः नियन्त्रणयोग्यम् • एकाकीभावे बलम् • पूर्वकथनीयम् • प्रभुत्वप्रियः	• समायोजनपूर्णं दृष्टिकोणम् • सामञ्जस्यं सहयोगश्च • स्वभावबद्धः नियन्त्रितश्च • परस्परमिलनभावनायां बलम् • अस्पष्टम्	• परिमाणात्मकं दृष्टिकोणम् • पुनः सन्दर्भीकरणम् • अस्तव्यस्तता • एकीकरणम्/समन्वये • बलम् अप्रत्याशितम्

[1] email- raidrsavita@gmail.com
Contact-9911903939

TIJER - INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

TIJER.ORG | ISSN : 2349-9249

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Ref No : TIJER / Vol 10 / Issue 7 / 137

To,
Dr. Savita Rai
Published in : Volume 10 | Issue 7 | July-2023

Subject: Publication of paper at TIJER - International Research Journal and Innovation - TIJER.

Dear Author,

With Greetings we are informing you that your paper has been successfully published in the TIJER - International Research Journal (ISSN: 2349-9249). Following are the details regarding the published paper.

About TIJER	: ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 8.57, ISSN: 2349-9249
Registration ID	: TIJER_107744
Paper ID	: TIJER2307137
Title of Paper	: Aadhyatmik Budheh Vimarsh
Impact Factor	: 8.57 (Calculate by Google Scholar)
DOI	: http://doi.one/10.1729/Journal.35720
Published in	: Volume 10 | Issue 7 | July-2023
Page No	: 244-248
Published URL	: http://www.tijer.org/viewpaperforall.php?paper=TIJER2307137
Authors	: Dr. Savita Rai

Thank you very much for publishing your article in TIJER. We would appreciate if you continue your support and keep sharing your knowledge by writing for our journal TIJER.

Editor In Chief
TIJER - International Research Journal
(ISSN: 2349-9249)

ISSN 2349-9249 TIJER

Indexing Google scholar ISSN Microsoft Academic ResearchGate Academia.edu RESEARCHERID MENDELEY Semantic Scholar
CiteSeerX SSRN .docstoc Google Scribd. OPEN ACCESS publons DOIONE

ISSN 2454-1230

अष्टादशांकः, XVIII[th] Issue
जुलाई - दिसम्बर, 2023
July - December, 2023

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्तराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अंजूसेठः
श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अष्टादशोऽङ्कः
जुलाई-दिसम्बर, 2023
ISSN No: 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्तराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवासवरखेडी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

सम्पादकौ
डॉ. नितिनकुमारजैनः
डॉ. आरती शर्मा

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अञ्जूसेठः
श्री अरुणकुमारमङ्गलः (अधिवक्ता)

प्रकाशकः
संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्
बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

अनुक्रमणिका

Message of the Patron ix

Editorial Message x

प्रबन्धसम्पादकीयम् xi

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 17 की समीक्षा xii

संस्कृतालेखाः

ग्रहातिग्रहलक्षणबन्धस्वरूपं ततो मोक्षोपायश्च - देवज्योति-कुण्डुः 1

महाभाष्यकृद्दिशा प्रत्ययाधिकारस्थानां योगविभागानां समीक्षा - बुलेट् मण्डलः 9

स्मृतिप्रोक्तन्यायालयस्य स्वरूपम् - एकं समीक्षणम् - हेमन्त सरकार: 20

भास्कराचार्योक्तरीत्या अधिमासावमशेषाभ्यां मध्यमचन्द्रार्कयोरानयनविधिः, तदुपपत्तिश्च - गिरीशभट्टः बि. 27

कविपुण्डरीक पं.सम्पूर्णदत्तमिश्रविरचितासु रचनासु अलङ्कारप्रयोगः - डॉ. गेहप्रदीप शर्मा 35

हिन्दी आलेख

मानव के उत्थान में श्रीमद्भगवद्गीता एवं कठोपनिषद् की भूमिका - डॉ. नवदीप जोशी 41

पुराणों में नारी - हरेन्द्र कुमार शर्मा 49

अथर्ववेद में दीर्घजिवनीय विद्या - डॉ. वेणुधर दाश 55

पुरुषार्थ चतुष्टय में वैदिक दृष्टि - डॉ. शम्भु कुमार झा 64

भारतीय वैदिक काल में अर्थव्यवस्था - डॉ राजेश मौर्य 70

महाकवि कालिदास के ऋतुसंहार में मनोविज्ञान - डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा 79

मुद्गलपुराण में अष्टाङ्गयोग का वर्णन - जानी वंदना यज्ञप्रकाश 86

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा की भूमिका - डॉ. सविता राय 94

वेदों में योग का स्वरूप - डॉ. प्रदीप कुमार 104

हिन्दी नाटक में किन्नर विमर्श - किसान गिरजाशंकर कुशवाहा 112

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति के गुण - सोमवीर 119

हिंदी भाषा की अवधारणा और विकास - डॉ. अजय कुमार 125

[illegible]
([illegible]-समीक्षिता
[illegible])
[illegible], जुलाई-दिसम्बर, 2023
ISSN: 2454-1230

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा की भूमिका

डॉ. सविता राय
सहायकाचार्या, शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली-110016

सारांश

यह ध्यातव्य है जब हम शिक्षा के किसी भी स्तर पर परिवर्तन अथवा परिमार्जन की बात करते हैं तो अध्यापक एवं शिक्षा संस्थानों की भूमिका तथा जिम्मेदारी बढ़ जाती है क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन तथा परिमार्जन हेतु योजनाओं तथा नीतियों को क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की होती है। कुशल शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों की होती है। कहा जा सकता है कि गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा उत्तम शिक्षा व्यवस्था की नींव है तो अन्यथा न होगा। इस प्रपत्र के अन्तर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की पृष्ठभूमि में शिक्षक शिक्षा, स्टैंड-अलोन तथा समग्र शिक्षक शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। साथ ही शिक्षा संस्थानों, और नवीनतम शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रम और इस बदलते परिदृश्य में शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालने का भी प्रयास किया गया है।
***मूल शब्द-** राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षक शिक्षा, बहुविषयक, स्टैंड-अलोन शिक्षक शिक्षा संस्थान ।*

भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 - 1986 में राष्ट्रीय नीति जारी होने के 34 साल बाद, भारत सरकार ने 29 जुलाई, 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रस्तुत किया। इस शिक्षा नीति में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली और शिक्षक शिक्षा में महत्वपूर्ण और आमूल-चूल परिवर्तन का प्रस्ताव रखा गया है। यह शिक्षक शिक्षा प्रणाली को केवल बहु-विषयक महाविद्यालयों (मल्टीडिसीप्लिनरी, स्वायत्त महाविद्यालय बनने के लिए) और विश्वविद्यालयों में स्थापित करने और सार्वजनिक विश्वविद्यालयों और बहु-विषयक महाविद्यालयों/ शिक्षण संस्थानों में वर्ष 2030 तक एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (Integrated teacher education programmes) स्थापित करने का प्रस्ताव करता है। इसका अर्थ है, स्टैंड-अलोन शिक्षक शिक्षा संस्थान (Stand-Alone Teacher Education Institutions-TEIs) का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, और साथ ही चार वर्षीय एकीकृत स्नातक की डिग्री भविष्य के सभी विद्यालयीय शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा सुझाए गए अन्य सहवर्ती सुधार भी हैं, जिसमें नियामक प्रणाली का पुनरोद्धार तथा अनुच्छेद 15.2, पृष्ठ 68 के अनुसार शिक्षक शिक्षा में अखंडता, विश्वसनीयता, प्रभाविता और उच्चतर गुणवत्ता को बहाल करने के लिए गुणवत्ता के उच्चतर मानकों को निर्धारित करने का सुझाव भी दिया गया है। अनुच्छेद 15.3 में यह भी कहा गया है कि वर्ष 2030 तक, केवल शैक्षिक रूप से सुदृढ़, बहु-विषयक और एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम ही कार्यान्वित होंगे।

ISSN 2454-1230

अष्टादशांकः, XVIII[th] Issue
जुलाई - दिसम्बर, 2023
July - December, 2023

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्तराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता
बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अंजूसेठः
श्री अरूणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अष्टादशोऽङ्कः
जुलाई-दिसम्बर, 2023
ISSN No: 2454-1230

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्तराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवासवरखेडी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

सम्पादकौ
डॉ. नितिनकुमारजैनः
डॉ. आरती शर्मा

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अञ्जूसेठः
श्री अरुणकुमारमङ्गलः (अधिवक्ता)

प्रकाशकः
संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्
बाडी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

अनुक्रमणिका

Message of the Patron ix

Editorial Message x

प्रबन्धसम्पादकीयम् xi

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 17 की समीक्षा xii

संस्कृतालेखाः

ग्रहातिग्रहलक्षणबन्धस्वरूपं ततो मोक्षोपायश्च - देवज्योति-कुण्डुः 1

महाभाष्यकृद्दिशा प्रत्ययाधिकारस्थानां योगविभागानां समीक्षा - बुलेट् मण्डलः 9

स्मृतिप्रोक्तन्यायालयस्य स्वरूपम् - एकं समीक्षणम् - हेमन्त सरकार: 20

भास्कराचार्योक्तरीत्या अधिमासावमशेषाभ्यां मध्यमचन्द्रार्कयोरानयनविधिः, तदुपपत्तिश्च - गिरीशभट्टः बि. 27

कविपुण्डरीक पं.सम्पूर्णदत्तमिश्रविरचितासु रचनासु अलङ्कारप्रयोगः - डॉ. गेहप्रदीप शर्मा 35

हिन्दी आलेख

मानव के उत्थान में श्रीमद्भगवद्गीता एवं कठोपनिषद् की भूमिका - डॉ. नवदीप जोशी 41

पुराणों में नारी - हरेन्द्र कुमार शर्मा 49

अथर्ववेद में दीर्घजिवनीय विद्या - डॉ. वेणुधर दाश 55

पुरुषार्थ चतुष्टय में वैदिक दृष्टि - डॉ. शम्भु कुमार झा 64

भारतीय वैदिक काल में अर्थव्यवस्था - डॉ राजेश मौर्य 70

महाकवि कालिदास के ऋतुसंहार में मनोविज्ञान - डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा 79

मुद्गलपुराण में अष्टाङ्गयोग का वर्णन - जानी वंदना यज्ञप्रकाश 86

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा की भूमिका - डॉ. सविता राय 94

वेदों में योग का स्वरूप - डॉ. प्रदीप कुमार 104

हिन्दी नाटक में किन्नर विमर्श - किसान गिरजाशंकर कुशवाहा 112

श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति के गुण - सोमवीर 119

हिंदी भाषा की अवधारणा और विकास - डॉ. अजय कुमार 125

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 17 की समीक्षा

डॉ. सविता राय
सहायकाचार्या, शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
ह्यार्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ॥
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः कस्तैः सह स्पर्धते ॥[१]

अर्थात् विद्या एक ऐसा धन है जो चोरों को भी दृष्टिगत् नहीं होता है परन्तु जिसके पास भी यह धन होता है वह सदैव सुखी रहता है| निश्चय ही विद्या प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों को दान देने से यह दान दाता के सम्मान में तथा स्वयं भी निरन्तर वृद्धि प्राप्त करता है और कल्पान्त तक (लाखों वर्षों तक) इसका नाश नहीं हो सकता है| विद्यारूपी गुप्त धन जिनके पास होता है, महान राजा भी ऐसे व्यक्ति के प्रति अपने गर्व को त्याग कर उसका सम्मान करते हैं| भला ऐसे व्यक्ति से कौन स्पर्धा कर सकता है?

जैसा कि मनीषियों ने कहा है कि ज्ञान का दान करने से इसमें और वृद्धि होती है। विद्वान व्यक्ति अपने लिखित अथवा मौखिक विचारों से समाज में व्यक्तियों का मार्गदर्शन करते हैं। विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध पत्र-पत्रिकाएं ज्ञान के संरक्षण तथा संचार का कार्य करती हैं। शोध पत्र तथा पत्रिकाएं दार्शनिकों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा चिन्तकों को एक ऐसा मंच प्रदान करती हैं जिससे वे अपने विचारों तथा नवाचारों से अनुसन्धानकर्ताओं, शिक्षकों तथा ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक शिक्षा तथा समाज के लोगों के ज्ञान तथा विचारों को परिशोधित कर उचित दिशा प्रदान करते हैं। शिक्षा प्रियदर्शिनी भी एक ऐसी बहुभाषिक अर्धवार्षिक पत्रिका है जो विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के विचारों को मंच प्रदान कर ज्ञान पिपासु क्षुधी व्यक्तियों की क्षुधा को शान्त कर उन्हें नयी दिशा तथा विचारधारा प्रदान करने का कार्य कर रही है।

संस्कृत संस्कृति विकास संस्थान द्वारा प्रकाशित शिक्षा प्रियदर्शिनी के प्रस्तुत अंक में कुल 31 आलेख हैं। भाषायी विविधता की दृष्टि से यदि इसकी समीक्षा की जाए तो इसमें ग्यारह पत्र संस्कृत, तेरह पत्र हिन्दी तथा 07 पत्र आंग्ल भाषा में लिखे गये हैं। जिसमें 16 पत्र भारतीय वाङ्मय, दर्शन तथा साहित्य से संबंधित हैं, 12 पत्र शिक्षा तथा समाजशास्त्र के विभिन्न आयामों यथा शिक्षणप्रशिक्षण, आपदा प्रबन्धन, शिक्षा का माध्यम, शिक्षण विधियों, मनोविज्ञान, शिक्षा का स्वरूप, मूल्यांकन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, विकास का समाजशास्त्र तथा संरचनात्मक भाषा शिक्षण विधियों आदि से संबंधित हैं। अंग्रेजी भाषा में लिखित अंतिम तीन पत्र पूर्णतः योगदर्शन के आलोक में विभिन्न संदर्भों को विवेचित कर रहे हैं।

---

[१] भर्तृहरि, नीतिशतकम्, श्लोक-16